अध्ययन सामग्री

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - III (तृतीय)

प्रश्न पत्र - नवम (उपन्यास)

सुमन कुमारी

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

एच.डी जैन कॉलेज, आरा

मो० - 7091260073

'मैला आँचल' ~~उपन्यास से~~

फणीश्वरनाथ रेणु

संभावित प्रश्नोत्तर

Scanned with CamScanner

'मैला आँचल'

प्रश्न:- 'मैला आँचल' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर- नामकरण एक स्वाभाविक आवश्यक तथा योजनाबद्ध प्रक्रिया है। पाठक कृति का नाम देखकर ही सर्वप्रथम उसके संबंध में अपनी राय बनाता है। उपन्यास का नामकरण ऐसा हो, जो कथा का रूप स्पष्ट कर सके अथवा उद्देश्य की पूर्ति कर सके। नामकरण प्रायः निम्नलिखित आधारों पर किये जाते हैं→

1. कथा-वस्तु के आधार पर जैसे- 'गोदान', 'गबन', 'त्यागपत्र'।
2. नायक के नाम के आधार पर जैसे- 'शेखर एक जीवनी', 'सुनीता', 'सुखदा' आदि।
3. स्थान विशेष के आधार पर जैसे- 'गढ़कुण्डार' 'साकेत' आदि।
4. उद्देश्य के आधार पर जैसे→ 'अमृत और विष' 'सेवासदन', 'मुजरिम' आदि।
5. व्यंजनात्मक आधार पर जैसे- 'नदी के द्वीप' 'अपने-अपने अजनबी', 'बूँद और समुद्र' आदि।

मैला आँचल के नामकरण का आधार — 'मैला आँचल' उपन्यास कोई प्रमुख पात्र या पात्रा नहीं है, इसमें विषय-वस्तु की विविधता वर्णन वैचित्र्य वातावरण की बहुलता और पात्रों की विविधता है। अतः कथा विशेष अथवा पात्र विशेष के नाम के आधार पर नामकरण करना उपयुक्त न होगा। इस उपन्यास के घटनाक्रम में भी बहुलता है। पात्रों का स्वतंत्र विकास हुआ है। मेरीगंज ही सारी कथा का केन्द्र बिन्दु है। अतः इस गाँव के नाम पर नामकरण हो सकता है था, परन्तु उपन्यासकार ने मेरीगंज की योजना प्रतीक रूप में की है। मेरीगंज देश के प्रत्येक गाँव का प्रतीक है। मेरीगंज किसी स्थान विशेष का परिचय नहीं होने देता। उपन्यासकार का उद्देश्य मेरीगंज के माध्यम

...ग्रामीण परिवेश का चित्रण करना है। अतः परिवेश को सम्बोधित करता हुआ कोई नाम ही रखना था। रेणु जी ने इसी आधार पर 'मैलाआँचल' नामकरण किया है। इस नामकरण के द्वारा उपन्यासकार स्पष्ट करना चाहता है कि भारत माता का आँचल मैला है। भारत गाँव में निवास करता है। भारत माता ग्राम वासिनी है, परन्तु ग्रामों की दशा अत्यंत दयनीय है। अज्ञान अशिक्षा तथा अंधविश्वासों के कीटाणुओं ने ग्राम वासिनी भारत माता का आँचल काट-काट कर मैला और जीर्ण-शीर्ण कर दिया है। शायद यही सोच कर रेणु ने इस उपन्यास का नाम 'मैला आँचल' रखा है।

नामकरण ऐसा होना चाहिए जो कथानक, पात्र और उद्देश्य के अनुकूल हो। इसमें मौलिकता, संक्षिप्तता, सरलता तथा कौतूहल जगाने की भी क्षमता हो। फणीश्वरनाथ रेणु ने स्वयं स्वीकार किया है— "यह है मैलाआँचल एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया, बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है। जब हम दक्षिण में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से को एक ही गाँव को इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।"

'मैलाआँचल' का शाब्दिक अर्थ — गंदा आँचल, ~~पिछड़ा हुआ प्रदेश~~ है और प्रतीक रूप में इसका अर्थ है पिछड़ा हुआ प्रदेश है। भारत के गाँव आज भी अज्ञानता अशिक्षा एवं रूढ़ियों के दलदल में फँसे हुए हैं। इसके सुधार और विकास के उद्देश्य को सामने रखकर उपन्यासकार ने इस उपन्यास का

नामकरण 'मैलाआँचल' किया है।
मैलाआँचल का नामकरण क्यों हुआ है। डॉ. प्रशांत ममता को लिखे गये पत्र में गाँव की विपन्नता का चित्रण करता हुआ इसके सुधार का संकल्प करता है वह मैलाआँचल के सुधार में लगा है। ममता उसे महात्मा गाँधी के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने को प्रेरित करती है — "पढ़ गये महात्मा जी प्रकाश और लालसा, मैं तो कहती हूँ कि यह वह महा प्रकाश है, जिसकी रोशनी में दुनिया निश्चय ही हजारों वर्ष का सफर तय कर सकती है।" प्रशांत इस गाँव के मैले आँचल के नीचे कर्म साधना करने का संकल्प करता है — "मैं साधना करूँगा ग्राम वासिनी भारत माता के मैले आँचल के तले।"

मैला आँचल से तात्पर्य पिछड़े प्रांत से भी है और रोशनी के प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होने के रूप में। कथानक की प्रमुख पात्रा कमला प्रशांत के प्रेम में आबद्ध हो जाती है। उसकी माँ चेतावनी देती है — "हत भागिनी! आँचल को मैला मत करना बेटी दुहाई।"

कमली कौमार्यावस्था में गर्भवती हो जाती है भारतीय कन्या के लिए यह कलंक है यदि प्रशांत उसे न अपनाता तो उसका आँचल मैला हो चुका था। परन्तु प्रशांत कमली को पत्नी रूप में स्वीकार कर उसके मैले आँचल को उज्ज्वल आँचल में परिवर्तित कर देता है।

(ii) उद्देश्य की दृष्टि से नामकरण ! — उद्देश्य की दृष्टि से मैलाआँचल नामकरण उपयुक्त है। कथानक का प्रमुख पात्र प्रशांत है। कथानक के उद्देश्य की पूर्ति उसी के द्वारा होती है। प्रशांत गाँव के मैले आँचल को उज्ज्वल बनाने का संकल्प करता है। बालदेव तथा कालीचरण प्रशांत के उद्देश्य को चेतना से स्वीकार न कर सिद्धांत रूप में ही स्वीकार करने के

के कारण उपन्यास के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक नहीं होते। प्रशांत सदैव रूढ़िवाद एवं सड़ी गली परम्पराओं के विरुद्ध संघर्ष करता रहता है। अतः उद्देश्य की दृष्टि से आलोच्य उपन्यास का नाम सार्थक है।

कथानक से संबंधित संपूर्ण आँचल ही मैला है। मेरीगंज में तातियों टोली, राजपूत टोली तथा कायस्थ टोली को लेकर जातिवाद की प्रतिद्वन्दिता है। प्रत्येक टोली एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करती है। संथालों को बाहर से आया विजातीय समझा जाता है। जमीनदार भूमिहीनों का शोषण कर रहे हैं। मठ और मंदिर भी व्यभिचार के अड्डे हो रहे हैं। ओझा पंडितों के बहकावे से पार्वती की विधवा माँ की हत्या की जाती है। इस प्रकार उपन्यासकार ने इस आँचल का सारा मैल सामने ला दिया है, जिसे प्रशांत हटाने का निरंतर प्रयास करता है। अन्य पात्र भी इस मैल को हटाने में अपना योग्य देते हैं। लक्ष्मी-सेवा दास, रामदास, बनिसिंह दास, नंगाबाबा ने अपनी अस्तित्व की रक्षा पर अपनी तेजस्वीता का परिचय दिया है। बाल देव गाँव में अस्पताल खुलने पर अपना सहयोग देता है वह चरखा सेन्टर की स्थापना करवाता है साथ ही गाँव में राजनीतिक चेतना का प्रचार करता है। कालिचरण, लक्ष्मी, फुलिया और गाँव की जमीन बेचने का प्रयत्न करता है। वह गाँव में सोशलिस्ट आन्दोलन को जन्म देता है। डॉ० प्रशांत के गाँव में आगमन से जागृति की एक नयी लहर व्याप्त हो जाती है। अंत में विश्वनाथ प्रसाद भी प्रशांत से प्रेरित होकर भूमिहीनों को पाँच पाँच बिघा भूमि लौटा देने की घोषणा करते हैं। मरणासन्न कमली डॉ० प्रशांत का साहचर्य पाकर नया जीवन

Scanned with CamScanner

करती है।
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उपन्यास में जो विस्तृत मैला आँचल सामने आता है उसे स्वच्छ करने के लिए प्राय: सभी पात्र अपने-अपने ढंग से प्रयत्नशील है। रेणु ने भूमिका में लिखा है- "इसमें फूल भी है शूल भी, धूल भी है गुलाल भी, कीचड़ भी है चंदन भी, सुन्दरता भी है और कुरूपता भी। प्रत्येक पात्र कीचड़ में फँसकर भी उससे निकलने का प्रयत्न करता है। वह मैला आँचल को स्वच्छ बनाने के प्रयत्न में लगा रहता है। अत: प्रत्येक दृष्टि से आलोच्य उपन्यास का नामकरण सर्वथा मौलिक, सटीक एवं सार्थक है। वह कथानक को अपने में समेटे हुए पाठकों की जिज्ञासा को बढ़ता है।